

[illegible]

भिन्नहासिदिनुरः सुरत न्यापुरुषं यः दृष्टो हितेन विद्युत्गतः
गर्ह ॥ ५ ॥ शोभा कोपा रो जाइ को पा को कोरसः वर वर मदन
गरिपहिते भा फना भगहाति जोरन सुरत गर्हः लोस्त्रीपुरुष
भदापहिते विद्यपात गर्ह २ पा कमा को अमिलि को पस्तः सिं
दुरः वर वर भाग गारः महसंग मिमि भा नः हाति जोस्त्रि सुरत गर्ह
सोः स्त्रिपुरुष भदापहिते विद्यपात ३ पा क पुरः स्वादाः पा
पतरो वर गारि महसंग मिमि सि लिग माले नग रि जो पुत सुरत
गर्ह ४ ॥ ३ ॥ ओ पुत भदापहिते स्त्रिका विद्यपात ग राउ नः ॥ ४ ॥

५३

मरिचः धतुः का वि आ पी पलाः लोघ्रः हति को चूर्ण वते वर गरी
ह तें गामि ॥ १ ॥ आ फ्रा लिंग माले प गरि जो पुत प सुरत गरु
ति पुरुष क तें वी प पात ग राउ नः न स क न्या ला इ विद्य पात ग राउ
न स क त क ॥ ५ ॥ अथ तें न न विधिः ॥ राजे वृक्ष का विद्या को मुदि
ननेः अपर हति वी वर गारि मिमि महसंग मिमि ना मिमि न पग
र मुत ग नुरः पुरुष को विद्यस्त महकु ॥ ५ ॥ तें जे लो को न गेः अ फे ल
गार का नुरः माहाति पि ॥ १ ॥ अथ धा स ३ डि वी दु क हा लो न वि
पुरुष आ फ्रा ना पाउ मा ले न ग ॥ १ ॥ तें ग नुरः विद्य पात ग

धेरेरे संम विद्यया तनह वर ॥ २॥ कुतुः का... कोत...
मातेपगनु. अथवा पुनर्नवपि धि... गुरु...
॥ ३॥ अथ... ग... हि... का... ॥ वलु... ना... ग...
का... ज... पि... अ... अ... क... ह...
... नो... मि... इति... मा... ग... घो... के... ज...
जाइका... स... जि... सु... म... पि... स्वा...
... वे... ग... र... ति... का... मि... इ...
मा... पु... ति... ॥ २॥ ...

... ए... धो... क... नेतयोः नरः... फल...
... न... वि... न... अ... मि... कुरु...
मा... व... कुरु... न...
... अ... अ... अ... अ... अ... अ...
... वि... अ... अ... अ... अ...
... अ... अ... अ... अ... अ...
... अ... अ... अ... अ... अ...
... अ... अ... अ... अ... अ...
... अ... अ... अ... अ... अ...
... अ... अ... अ... अ... अ...

मरिच-भा-पिपला-भा-पुसुठा-भा-प-विन्या-नु-भा-
चु-वा-नु-भा-प-पि-सुर-भा-प-अम-ला-भा-प-हरो-प-वरे-प-
हो-प-भा-प-हो-पर-भा-प-पि-व-ह-ग-र-नु-पा-नि-अ-ष्टा-व-से-सा-
पि-प-का-नु-लो-कु-लो-ते-हि-पा-नि-अ-हा-ति-र-वा-उ-र-सु-त-क-वा-उ-
नि-लो-ह-कु-पि-प-स-प-कु-कु-र-नि-प-नि-कु-कु-
गो-ला-नि-को-भा-ओ-ष-ध-वे-वा-द-व-ओ-ला-नि-नि-
कु-लो-ह-रो-स-म-भा-ग-हा-त-नु-र-वा-नु-नि-को-ह-कु-
॥

पूर्व-वां-धु-द-धि-म-वां-धु-उ-त-र-वां-धु-द-हि-रा-वां-धु-वा-रे-चौ-ल-स-वां-धु-
भा-का-स-वां-धु-व-गा-न-वां-धु-पी-ह-वां-धु-जी-व-वां-धु-ओ-ना-ग-न-जि-नि-व-
त-रे-उ-दे-वि-दे-उ-रा-नि-र-व-रे-उ-हा-का-सि-मे-भू-मे-भू-त-वे-त-उ-
पि-नि-स-वां-धु-नि-व-र-वा-ध-त-को-रि-नि-को-ला-ग-रि-अ-न-
सा-क्रो-ला-ग-वे-नि-गा-नि-को-रि-स-र-वा-गो-तां-लो-ला-त-स-न-
वा-रि-सु-को-मो-मो-न-रि-स-न-शो-न-वि-कु-र-उ-रे-व-र-वा-ध-
को-धा-वा-न-हा-दे-व-कि-वा-वा-र-नु-मान-कि-वा-वा-गु-रु-कि-वा-
वा-ध-ना-दि-वै-द्य-को-वा-चा-
॥

अमिली को फल कुंवर राजे को विना हरे चेत को जरा स्तिते वर
वर भाग गौरि. जत भागि धिले पग गुरु का धि को पनिस रिते
पनि दुर्गंध हराउं. न जागे य को पुरा अगुरु उसी र वयार वं
गुरि सुग विनाला श्री धार डये नि वर वर भाग गौरि जत भागि
धिले प गौर प। सिना को दुर्गंध हराउं सर्व व्या २. विमिर का
जो गगाइक र दमाप काइ गाइयु तमा मि होइ ज मया
त प न देन हारि। तेन दिन से मेला नुर पुर संभोग हो स्त्री
रनाइ ॥ अंधार रागु न ॥ १

हृशानमकापातलायदा एमकाकाकाइतवनकावका
येतिपरोवरभागगरिजलमाभिहाइलेपगनुरसरिकोदू
गंधजान्दु१चिनिहातिपकायाकागाइकाहुइमाइकाछामि
आइघाममासुकाइतस्कापिठकोवारागाइकाद्यीउमा
पकाइसंधप्रदोषकालमाजोरवान् सोबुछेभयापनितर
रागभन्यावाहोभैसयस्त्रीसगपनिभोगगनसकर
रसांनजनगेररक्तचनेनपुछोरहेदोचुमोकोकाठस्थि
नुनइकुथोकमासिधानुनकागारिअरथोकवरोवरभा
गगरिअग्रिमातताइआरेंवाहिरओरपरिहेंपला

उतुरआरेंदुष्याकोनिकोहुनुहातिपनिमान्दु१सुठो
हिडुटिमुनवरोवरगरिपानिहातिपिदुइनिलकातेतमा
पकाइकानमाहातनुरकाब्याक्याकोइरकाकोवैदोम
याकोचक्याकोनिकोहुनु१धनिमाभोथमाजिरइति
थोकवरोवरभागगनुअतिकतापिपहाहातिपिहेरका
नुरवपटिपियासरकुटसुथोओषतिपाहरवहाइहिल
कंसुमपानुवरोवरगरेपिहेरएतिजतिजतिमाभागे
रखानरउंकाभरिजानुन०वालास्यहित१आंछाकोचावेल
०कोचरवाहेकोमितकाइतिनुचोउचरवाहाकोचोहाति

का तालिका पद का का उतुका दया क/म सा यें रखा नुर
दाहा ॥ पयार र दुर ॥ वात स्पहित ॥ धनि आ-मा प्या-के रुखा
उतिह न तै चंदन सुखा ॥ एतिह यो क को का थ प का इ-खा नुर
पति तिला हद दू वात स्पहित म-आ घंड हुरी दरिया-
वदाम सति व यो क दै ऐरी जिवहा मार ओठ मोड नुर-जि
वहा पुरा को ओठ पुरा को-घा मग खा को नि को हु नू
गर्म मयामा-दरिया-आखु वदाम घाटेर जो निर मोटा
उनुपनि-रवा नुपनि-अति सीतल ह नू ॥११॥

विदारिकंद को चूरी ते से कार स अ म जा इ द्या म मा लुका
या को घिउ मह संग मि साइ संधे खा नुर-तर म नुष्य का द
शो टिखी सीत पनि भोगा ग न स कर ॥११॥ अ म हा को
चूरी त से कार मा भिजा इ घिउ नी म ह संग-एत मा जो
उर संधे भी जन गर्ह त्यो द शो टिखी सीत पनि सुत न स व
॥१२॥ इ त ना जि कर खा पुरुष को वत किर्य न ठाउ न्या औषध
जाइ को पुरा त वोग मि लाइ स सिउ का ते ल मा प का उ नु त्यो ते

१॥ नगमातेप नगरि सुरतगदीमा यो निदेखि वडा सुवास
हुने ॥ १॥ यो निसे स्कार ॥ हरे वरे अमला धनो
को फल जमुना का वो को लो ध हति वरो वर गरि चुरी गरि
महसंग भिसियो निमातेप नगरि नरपु कुलो भया स्त्री हुने ॥ १॥
अथ नरपुष्य समुद्र वा विधि ॥ मातका जमुना का पात भुति
ला वाद्रमा स्या को फल समेत जलमा पि पि उ नुर खी ला
इर जुहुने ॥ २॥ अथ नरपुष्य विधि ॥ सुन चा दिना वा

को भस्म महमा मिता इर ज भया का चौथा दिन ~~मा~~ दे
षा नुरग भद्रा यथा सुधम इग भद्रा र राग हुने ॥ ५॥
गेश्वर का फल को चुरी गाइ का धि उमा मिता इर ज भया
का चौथा दिन देखा त दिन समसा नर सा ज विहे न गाइ के पु
दपानि रानु नरपुष्य का संयो गते स्त्री ग भद्रा र राग न्या
हुने ॥ ३॥ अथ मरिच पिपला कट कारि केशर हति वरो व
पागः ॥ ४॥ गनु गाइ का धि उमा मिता इर ज भया का

ॐ ध्यादिनमाखानुरवोमीत्याह्निरुहस कासंगतेगर्भ
 ररागो ॥३॥ अथान्योषधं ॥ रक्तकमल कोगानु
 चूरीगरिगाडूकोदुदघिउमामामिलाद्रपकाउनुसित
 होभयापक्षिरवानुरखैद्राउनतयारभयाकोगर्भ ध्यामि
 न्दुगर्भवाति कोवांतिभूतसोथवातपिनाफफ काविकारते
 भयाकाधैरैतरहकारोगपनिनासहु ॥ त्रिदोषपनिनासा
 न्दु ॥१॥ अवसुरैलेप्रसूतिहुन्याओषधमंत्रउपायक

नु॥ विमरा को जरो • महुवा को जरो इदुवै को चूर्ण मह
 गाइ को छिउ मा मिता पिनु चाटे स्त्री प्रसवहु न्हे ॥ १॥ पुं
 सो वा सिपा नि सत मिता इपि नुर स्त्री हो इ सु रेव ले चाटे प्रस
 वहने ॥ २॥ आदित्य वार मा उ धि ति त्या पा को रा ति मे डि को जरो
 निता धागा मा वा धि क ठि मार सिर मा वों ध नुर चाटे स्त्री हो इ
 प्रवह नु त त मा वन मंत्रः ॥ ३॥ मन्मथ मन्मथ मन्मथ वा हि ति पा
 मन्मथ मन्मथ मन्मथ मन्मथ ॥ ४॥ मन्मथ मन्मथ मन्मथ मन्मथ

नरि नुरसुरवेले चोरे प्रवेहने अं बराज का प्रसादे ॥ ४ ॥ अथ
रं व्यालोत्पादनं ॥ तिन वषकी पुरानुगड चार चार नौ हा प्रधारे
जस मार नुरसुरा उं जाहा गर्भ धारण हुदै न १ धान का भुस वि
ता के जोरो वरोवर भाग गरि का था ॥ नुरज भया का वातु र्ध दिन मा
प नुर गर्भ धारण हुदै न ॥ २ ॥ अथ केसरं जन ॥ तिल का फूल
गे जोरो वरोवर भाग गरि पि पि के स मा ले पन ग नुर के स धेरे पनि
हु ॥ मा प नि हु न ॥ १ ॥ रा ति गो ट को चूर्ण मह मा ॥ मि ला इ ले प ग नुर

रो इरो लम्पा को नि को हु न ॥ सु दर के स प नि हु न ॥ २ ॥ हा ति को
हा ते पा ति चूर्ण गर्नु तो चूर्ण पा नि मा मि ला इ ले प ग नुर र रो रो नि
को हु न धेरे के स प नि उ म्म न ॥ ३ ॥ गि तो च न ॥ का ला ति ह
॥ हा का जरा ॥ हा ति चोरो वर भाग गरि म सि नु गरि पि पि
के स प न प ग नुर का ल के स हु न ॥ ४ ॥ निम को ले हा चा
गर तो ला मे ॥ दिन ॥ पि नुर से ल के स प नि क्र मे ते भ्र म र ज
ता ॥ को ल गु न ॥ ५ ॥ अ ॥ मुर प के ट क हर रा म ॥ वो फो-

लोक्षः धाने ना. एति वरोवर भाग गरि चूर्ण गरि पा
। नेमा मिता इति न संमते पगनीले प निरं डि फे
डं डि मोर प्रभृति मुक्ता न माह न्पाखटिरा नि कोह नृ
लोक्षः धाने ना. एति वरोवर भाग गरि चूर्ण गरि पा
निमा मिता इति न संमते पगनीले प निरं डि फे
हरहर उक्त ॥ २॥ अथ मुख छया हरणम् ॥ काताति
लक्ष्म जिरा. जिरा. स हि उं. ३ चार थोक वरोवर भाग

गरि चूर्ण गरि गा इकादुह मा मिता इसा त दि न संम
ने पगनीले चाया जा नृ नृ. चंद्र विंम जस्ता उ मा लो मुख
हृत् ॥ ११॥ गेरु. ठेठ लो. जठि मधु. लुब्धा. नृ वी. ह
लेह. एति वरोवर भाग गरि केर का पा निमा मिता
इति विसात नि व संमते पगनीले चाया जा नृ नृ
इति विसात नि व संमते पगनीले चाया जा नृ नृ
अथ कृच संस्कारः ॥ २॥ अथ कृच संस्कारः ॥
अथ कृच संस्कारः ॥ २॥ अथ कृच संस्कारः ॥